मिथिला की सांस्कृतिक विरासत और भारत–नेपाल संबंध

राजीव कुमार

10+2 शिक्षक

ग्राम बिस्फी मोतनाजे पो० बिस्फी जिला मधुबनी (बिहार)

भारतवर्ष के प्राक्–ऐतिहासिक युग के साहित्य में मिथिला का स्थान विशिष्ट एवं प्राचीनतम है। इसका अतीत अतीव समुज्जवल रहा है, जो किसी भी देश अथवा जाति को गौरवान्वित करने के लिए पर्याप्त है। इस जनपद के प्राचीन निवासी एवं भूपतिगण जितने ही अपने शुद्धाचार, ज्ञान–विज्ञान, विभव तथा न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध थे, उतना ही उनेक शौर्य एवं पराक्रम भी अदम्य था। इनके आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों ही पक्ष श्लाध्य और आदर्श थे। प्राचीन साहित्य के युगों में भारतीय संस्कृति के उच्चादर्श के लिए इस भूमि की जैसी ख्याति थी उसका बहुलांश आज भी यहाँ जीवित दशा में यत्र–तत्र मूर्त्तिमान और विद्यमान दृष्टिगत होता है।

मिथिला का सांस्कृतिक संबंध पड़ोसी राष्ट्रों से अविच्छिन्न रूप से प्रगाढ़ रहा है, खासकर नेपाल के साथ। दोनों देशों के बीच साहित्यिक संबंध की पुष्टि नेपाल में प्राप्त तिरहुत लिपि में प्राप्त पांडुलिपि से होती है। इसी तरह तिरहुत में मिली नेपाली लिपि से यह ज्ञात होता है कि नेपाल के लेखक भी यहाँ आकर बस गए थे। इससे यह ज्ञात होता है कि दोनो देशों का सांस्कृतिक संबंध पारस्परिक था और आदान–प्रदान दोनों दिशा में होता था। इन्हीं स्थलों पर पल्लवित और पुष्पित होने वाला बौद्ध धर्म आज संपूर्ण विश्व में अपना डंका बजाता हुआ प्राणिमात्र के लिए प्रेरणा बना हुआ है।

नेपाल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में मुख्यतः दुसाध जाति के गाथानायक सलहेस, मुसहरों के दीनाभद्री एवं यदुवंशियों के किसनाराम से संबद्ध लोकदेव मण्डित गहवर, गाथागायन, लोकवाद्यों पर गाए जाने वाले गीतनाद, गाथाधारित नाच, लोकमूर्तियाँ आदि परंपरित है। राजा सलहेस से संबंधि गढ़ महिसौथा, पकडियागढ़, मानिकदह, फुलवाड़ी आदि, दीनाभद्री से संबद्ध जोगिया जांजर, कटैयावन, कुनौली आदि तथा किसनाराम से जुड़े देउरी बथान, नरहा–बरहा, महुलीवन आदि लोक आस्था के केन्द्र बने हुए हैं। इन लोकदेवताओं के वार्षिक पूजनोत्सव पर लाखों की संख्या में आस्थावान लोग सांस्कृतिक संगम का परिदृश्य निर्मित करते हैं।

संस्कृति वह जीवन पद्धति है जिसकी स्थापना मानव व्यक्ति तथा समूह के रूप में निर्माण करता है, वह उन आविष्कारों का संग्रह है जिनका अन्वेषण मानव ने अपने जीवन को सफल बनाने के लिए किया है। इन अन्वेषणों में मानव तब सफल होता है जब वह अपनी आत्मा तथा बाह्य विश्व या प्रकृति दोनों का संस्कार करे। अपनी आत्मा और प्रकृति या बाह्य विश्व पर विजय पाकर ही मानव उन्नत हो सका है। अपनी आत्मा के बल का विकास करके विश्व की शक्तियों पर, प्रकृति पर विजय प्राप्त करके ही मानव ने अपना जीवन सफल किया है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि संस्कृति मानव द्वारा प्रकृति पर प्राप्त विजय की क्रमबद्ध रोचक कहानी है।[2]

प्राचीन भारत के सांस्कृतिक जीवन में मिथिला की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मिथिला भारत का एक अति प्राचीन राज्य है और यह आर्यों के प्रारंभिक विस्तार काल में ही आबाद हुआ था। आर्यों ने मिथिला में न केवल अपने राजनीतिक उपनिवेश स्थापित किए, बल्कि उन्होंने यहाँ सामाजिक संगठन की भी आधारशिला रखी। पश्चिमोत्तर भारत में अपनी संस्कृति स्थापित कर आर्यों ने पूर्वोत्तर भारत में प्रयाण किया और सर्वप्रथम मिथिला में ही अपने को केन्द्रित किया। मिथिला ही

आर्यों का वह क्षेत्र है जहाँ से आर्य सभ्यता व संस्कृति का विस्तार बिहार में हुआ और तत्पश्चात संपूर्ण पूर्वांचल में आर्यों को फैलने में मदद मिली।

भारत वर्ष के प्राक्–ऐतिहासिक युग के साहित्य में मिथिला (तीरभुक्ति अथवा तीरहुति अथवा तिरहुत) का स्थान विशिष्ट एवं प्राचीनतम है। इसका अतीत अतीव समुज्ज्वल रहा है, जो किसी भी देश अथवा जाति को गौरवान्वित करने के लिए पर्याप्त है। इस जनपद के प्राचीन निवासी एवं भूपतिगण जितने ही अपने शुद्धाचार, ज्ञान, विज्ञान, विभव तथा न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध थे, उतना ही उनके शौर्य एवं पराक्रम भी अदम्य था। इनके आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों ही पक्ष श्लाध्य और आदर्श थे। मानसिक विकास के साथ–साथ मिथिला का आर्थिक, औद्योगिक एवं सामरिक विकास भी उस युग में सराहनीय था। 'शतपथब्राह्मण', 'रामायण', 'पुराण' आदि प्राचीन साहित्य के युगों में भारतीय संस्कृति के उच्चादर्श के लिए इस भूमि की जैसी ख्याति थी उसका बहुलांश आज भी यहाँ जीवित दशा में यत्र–तत्र मूर्त्तिमान और विद्यमान दृष्टिगत होता है।[3]

मिथिला की भूमि प्राचीन काल से उच्च शिक्षा और आध्यात्मविद्या का केन्द्र था। यह जनक से कर्णाट् युग तक शिक्षा के क्षेत्र में एक गढ़ के रूप में समादृत रही है। गौतम–याज्ञवल्क्य से लेकर मण्डन–वाचस्पति और चण्डेश्वर तक साहित्याकाश के अनेकानेक नक्षत्रों ने अपनी प्रभा से इस रत्नगर्भा भूमि को चमत्कृत करते हुए मिथिला की गौरवमयी परंपरा को अक्षुण्ण रखा है। स्मृति, व्याकरण, निबंध एवं साहित्य के भंडार को भरने में भी मिथिला का प्रयास सराहनीय रहा है। गौतम, कणाद, जैमिनी एवं कपिल ने मिथिला भूमि में ही क्रमशः न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं सांख्य दर्शन का प्रतिपादन किया। इसी समय में मिथिला की सहयोगी नगरी वैशाली जैन एवं बौद्ध दर्शन का केन्द्र बनी रही और फिर बाद के युगों में कुमारिल, मण्डन, वाचस्पति, उदयन, गंगेश आदि के नेतृत्व में मिथिला 'ब्राह्मण–दर्शन' की एक प्रसिद्ध पुनर्स्थापित केन्द्र बनी। मिथिला के राजा जनक

जीवन मुक्ति के प्रतीक थे। यह दार्शनिक राजा 'विदेह' के नाम से विख्यात थे। विलासिता की सामग्रियों के बीच वे कीचड़ में कमल–पत्र के समान रहते थे। राजा जनक के विषय में यह उक्ति है–

''मिथिलायं प्रदीप्रायं न में दह्यति किंचन।''

अर्थात संपूर्ण मिथिला जल रही हो तो भी वह मुझे नहीं जला सकती है।[4]

उनकी ख्याति से भारत के विभिन्न क्षेत्र के विद्वान आकर्षित होकर वहाँ पहुँचते थे।

''जनको जनक इति वै जना धावंतीति''।

इससे स्पष्ट होता है कि मिथिला विद्वता का केन्द्र था।

भारत के इतिहास और पुराणों में भी मिथिला का एक विशिष्ट स्थान रहा है। मिथिला की गौरवशाली परंपरा ऋषि–मुनियों के ज्ञान से तो आच्छादित है ही, इसने हर तरह की कट्टरता का भी हमेशा निषेध किया। मिथिला की परंपरा में मंडन–भारती, आयाची मिश्र, शंकर मिश्र, वाचस्पति मिश्र और कवि कोकिल विद्यापति की कहानियाँ भी हैं जो बताती हैं कि मिथिला ज्ञान के शिखरों पर आरूढ़ था। मिथिला के लोकगीतों में यहाँ की परंपराएँ गूंजित होती है। चित्रकारी, कोहबर, मिट्टी के महादेव, सामा–चकेबा यहाँ की संस्कृति का अंग है। यहाँ हर जाति के लोक देवता हैं जिन्हें पूरा सम्मान के साथ देखता है।[5]

मिथिला का संबंध सांस्कृतिक रूप से पड़ोसी राज्यों एवं राष्ट्रों से भी अविच्छिन्न रूप से प्रगाढ़ रहा है। मिथिला का सांस्कृतिक संबंध पड़ोसी राज्य बंगाल से प्राचीन काल से ही रहा है। कहना अतिशयोक्ति न होगा कि मिथिला ने कई क्षेत्रों में बंगाल को प्रभावित किया है। मिथिला के सपूत चण्डेश्वर, हरिनाथ उपाध्याय, भव शर्मा, इन्द्रपति, पद्मनाभदत्त आदि ने बंगाल के कई

स्मृतिकारों को काफी प्रभावित किया। मिथिला और बंगाल के बीच सांस्कृतिक संबंध ओइनवार काल से ही विद्यमान है। बंगाल के नादिया विश्वविद्यालय में **नव्य–न्याय पीठ** के संस्थापक रघुनाथ शिरोमणि तथा **स्मृति पीठ** के उद्धारक रघुनन्दन मिथिला के ही शिष्य थे। मिथिला तथा बंगाल के उक्त सांस्कृतिक संबंध के कारण दोनो प्रदेश एक–दूसरे के आचार–विचार, धार्मिक आस्था के काफी निकट आए और दोनों के सामाजिक जीवन में भी काफी निकटता आई। आज भी मिथिला का पान एवं मखान बंगाल में काफी लोकप्रिय है।

मिथिला का सांस्कृतिक संबंध पड़ोसी देश नेपाल से भी काफी प्रगाढ़ रहा है। दोनों देशों के बीच साहित्यिक संबंध की पुष्टि नेपाल में प्राप्त तिरहुत लिपि में प्राप्त पांडूलिपि से होती है। इसी तरह तिरहुत में मिली नेपाली लिपि से यह ज्ञात होता है कि नेपाल के लेखक भी यहाँ आकर बस गए थे। इससे यह ज्ञात होता है कि दोनों देशों का सांस्कृतिक संबंध पारस्परिक था और आदान–प्रदान दोनों दिशा में होता था।

भारतीय एवं नेपाली दोनों ही संस्कृति पुरातन काल से ही अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित हो रही है। इन्हीं स्थलों पर पल्लवित और पुष्पित होने वाला बौद्ध धर्म आज लगभग संपूर्ण विश्व में अपना डंका बजाता हुआ प्राणिमात्र के लिए **बहुजन हिताय बहुजन सुखाय** की प्रेरणा बना हुआ है। इसके साथ ही जहाँ नेपाल के सप्तरी जिला में राजा सलहेस, दीनाभद्री एवं किसना राम की लोकगाथाएँ प्रचलित हैं उसी प्रकार भारत में बिहार के विभिन्न प्रांतो में खासकर मिथिला क्षेत्र में लोरिक, दीनाभद्री, दुलरादयाल, सलहेस आदि की लोकगाथाएँ श्रद्धा, विश्वास और आस्था के साथ गायी जाती है जिसके कारण इन दोनों राष्ट्रों की संस्कृति एक–दूसरे को परस्पर प्रगाढ़ बनाती हैं एवं पूरक होती है।[6]

नेपाल के सप्तरी जिला का भौगोलिक सीमा मुख्यतः उत्तर में उदयपुर, पूर्व में सुनहरी, दक्षिण में सहरसा और मधुबनी जिला एवं पश्चिम में सिरहा से बनती है। यह वस्तुतः नेपाल के तराई भाग (मधेश) में अवस्थित है। यहाँ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में मुख्यतः दुसाध जाति के गाथानायक सलहेस, मुसहरों के दीनाभद्री एवं यदुवंशियों के किसनाराम से संबद्ध लोकदेव मण्डित गहवर, गाथागायन, लोकवाद्यों पर गाए जाने वाले गीतनाद, गाथाधारित नाच, लोकमूर्त्तियाँ आदि परंपरित हैं। राजा सलहेस से संबंधित गढ़ महिसौथा, पकड़ियागढ़, मानिकदह, फुलवाड़ी आदि, दीनाभद्री से संबद्ध जोगिया जांजर, कटैयावन, कुनौली आदि तथा किसनाराम से जुड़े देउरी बथान, नरहा–बरहा, महुलीवन आदि लोकआस्था के केन्द्र बने हुए हैं। इन लोकदेवताओं के वार्षिक पूजनोत्सव पर लाखों की संख्या में आस्थावान लोग सांस्कृतिक संगम का परिदृश्य निर्मित करते हैं।[7]

नेपाल का मध्यकालीन इतिहास मल्ल राजवंश के गौरवगाथा से परिपूर्ण है। इस वंश के शासन काल में नेपाल में साहित्य, संगीत, शिल्प आदि की अभूतपूर्व उन्नति हुई। कलाभिव्यक्ति का चरमोत्कर्ष इस काल में देखने को मिलता है। मल्ल राजवंश का मिथिला के कर्णाट वंश के संग रक्त का संबंध रहने के कारण नेपाल में मिथिला, मैथिल एवं मैथिली भाषा का आदर भाव स्वभाविक रूप से विद्यमान था। मिथिला से अनेकानेक विद्वान, पण्डित, कवि, संगीतज्ञ एवं अन्य शास्त्र व विषय के ज्ञाता को नेपाल में आमंत्रित कर अपने राज सभा में सम्मानपूर्वक स्थान दिया जाता था। नेपाल के सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में मिथिला के अनेकानेक धर्मशास्त्रियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। गृह, भूमि, जाति, मृतक संस्कार आदि के संबंध में नियम बनाने हेतु स्थितिमल्ल ने मिथिला के रघुनाथ झा और रमानाथ झा से सहयोग लिया था।[8]

नेपाल और भारत दोनों देश धार्मिक रूप से एक दूसरे से अविच्छिन्न रूप से संबद्ध रहे हैं और आज भी कई धार्मिक अनुष्ठान भारत एवं नेपाल में समान रूप से मनाया जाता है। धार्मिक साहित्य रामायण जितनी श्रद्धा से भारत में पढ़ी जाती है उसी श्रद्धा से नेपाल में भी पढ़ी जाती है। रामायण के पात्र भारतीयों के लिए जितने प्रिय और अनुकरणीय हैं उतने ही नेपाल वासियों के लिए भी। भारत और नेपाल दोनों देश में रामलीला का आयोजन एक जैसे उमंग और उत्साह से किया जाता है। दोनों देश में रामनवमी, जानकी नवमी, विवाह पंचमी का त्यौहार एक जैसा मनाया जाता है। इन त्यौहारों के द्वारा सीता राम की पूजा अर्चना की जाती है। हर साल विवाह पंचमी के अवसर पर हजारों मिथिला वासी नेपाल के जनकपुर में अवस्थित सीताराम मंदिर का त्रिपेक्षण करते हैं।

मिथिला में शिव–शक्ति की उपासना का जितना महत्व है उतना ही नेपाल में भी। मिथिला के लोग नेपाल में अवस्थित पुशपतिनाथ मंदिर जाना अपना सौभाग्य समझते हैं। हजारों की संख्या में लोग महाशिवरात्रि के अवसर पर पशुपतिनाथ का दर्शन करने काठमांडू जाते हैं। ठीक उसी प्रकार नेपाल के लोग भी प्रति वर्ष सावन महीने में बैद्यनाथ धाम आकर पूजा अर्चना करते है।

भारतीय परंपरा में पिंडदान की प्रथा है। हर भारतीय परिवारों में पुत्रों के द्वारा अपने पितरों का पिंडदान किया जाता है, उसी प्रकार नेपाल के लोग भी पिंडदान की प्रथा को स्वीकार करते हैं और हजारों की संख्या में गया (बिहार) आकर अपने पितरों के लिए पिंडदान करते हैं। मिथिला के हर घर में कुल देवी की पूजा घर में स्थापित कर की जाती है। इसी तरह नेपाल के मधेशी परिवार में कुल देवी की पूजा की जाती है। वहाँ भी मिथिला के घरों की तरह हर पर्व त्यौहार के अवसर पर कुल देवी की विशेष पूजा अर्चना, पातरिदान किया जाता है। राजा सल्हेश की पूजा दोनों प्रदेशों में एक जैसा मनाया जाता है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि दोनों देशों के बीच धार्मिक, आध्यात्मिक भावना आत्मा और शरीर की तरह जुटे हुए हैं। भारत–नेपाल के आचार–विचार रीति–नीति एक जैसी है। दोनों देश दो शरीर और एक आत्मा जैसे हैं। इसलिए तो नेपाल की सीता यहाँ जगत जननी एवं यहाँ के राम नेपाल में जगत पिता के रूप में अराध्य हैं।

संदर्भ सूची :–

1. **मिश्र, डा0 जयशंकर,** प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना,2001, पृ0 488

2. **लूनिया, बी0एन0,** प्राचीन भारतीय संस्कृति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2003, पृ0 5–6

3. **शर्मा, डा0 रामप्रकाश,** मिथिला का इतिहास, का0सि0 द0सं0 वि0वि0, दरभंगा, 2002, पृ0 1–2

4. **दिवाकर, आर.आर.,** Bihar Through the Ages, K.P. Jaiswal Research Institute, Patna, 1959, P. 122&23

5. **पासवान, डा0 संजय,** मिथिला, संवाद मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2014 पृ0 5

6. **राधाकृष्णन, डा0 सर्वपल्ली**, धर्म और संस्कृति, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 7

7. **मौन, डा0 प्रफुल्ल कुमार सिंह**, 'सुरसरि' त्रैमासिक, अंक 27, पृ0 36

8. **राइट, डी0**, हिस्ट्री ऑफ नेपाल, पृ0 97

9. **भण्डारी, दुण्ढ़िराज**, नेपाल की ऐतिहासिक विवेचना, पृ0 78

10. **शर्मा, बालचन्द्र**, नेपाल की ऐतिहासिक रूपरेखा, पृ0 194